बीकानेर, बुधवार
1 जुलाई 2015

उपलब्धि › अमरीका की कम्पनी ने की घोषणा

बीकानेर के नाम रहे कई एक्सीलेंस अवार्ड

बीकानेर @ पत्रिका

patrika.com

पुरामहत्व वाले शहर बीकानेर के नाम कई एक्सीलेंस अवार्ड रहे है। बीकानेर के पांच शताब्दी प्राचीन भांडाशाह जैन मंदिर को अमरिका की ट्रिप एडवाजर कंपनी ने सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेन्सी-2015 अवार्ड से नवाजा है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर के इस सम्मान के साथ कंपनी की ओर से अपनी वेबसाइट में बीकानेर के जूनागढ़ व भांडाशाह जैन मंदिर की विस्तृत जानकारी अपलोड की है, इससे संसार के विभिन्न स्थानों पर प्रवास कर रहे देशी-विदेशी पर्यटक बीकानेर के वैभव के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

श्रीचिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास के अध्यक्ष निर्मल धारीवाल ने बताया कि बीकानेर में पांच शताब्दी प्राचीन भांडाशाह जैन मंदिर धार्मिक आस्था के साथ पर्यटन केन्द्र में रूप में निरन्तर ख्याति प्राप्त कर रहा है। जैन धर्म के पांचवें तीर्थंकर भगवान सुमति नाथ का यह मंदिर नींव में घी डालने के साथ वास्तु व शिल्पकला में भी अनुकरणीय है।

बीकानेर नगर में विशाल, सर्वोच्च शिखर वाले भव्य एवं कलात्मक तीन मंजिले त्रैलोक्य दीपक प्रसाद सुमति नाथ जैन मंदिर के निर्माण करने वाले भांडाशाह के नाम से अधिक जाना जाता है। इसके शिलालेख में बताया कि संवत् 1571 में, आसोज सुदी दूज, महाराजा लूणकरण सिंह के समय मंदिर का निर्माण कराया गया।

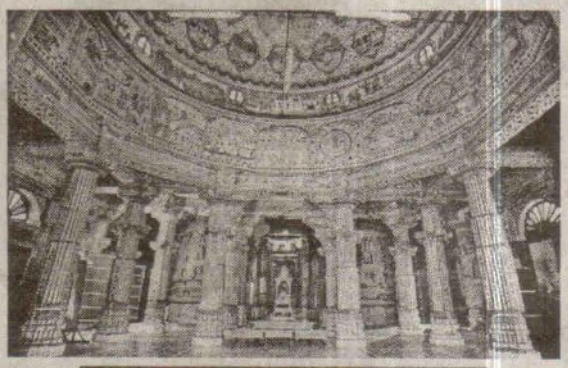

लालगढ़ पैलेस और सादुल म्यूजियम को भी अवार्ड

शहर के लालगढ़ पैलेस और सादूल म्यूजियम को भी अमेरिकन ट्रेवल कंपनी ने एक्सीलेंस अवार्ड से नवाजा है। समन्वयक दलीपसिंह ने बताया कि महाराजा गंगासिंह ने 1902 में अपने पिता की याद में लालगढ़ पैलेस का निर्माण करवाया था। यह महल वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है। पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से महाराजा डॉ. करणीसिंह ने ला पैलेस के एक हिस्से को होटल में परिवर्तित कर दिया। इसी पैलेस के एक हिस्से में सादूल म्यूजियम संचालित होता है। महाराजा गंगासिंह ट्रस्ट द्वारा संचालित पैलेस और म्यूजियम पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं।

दैनिक
युगपक्ष
बीकानेर . बुधवार
01.07.2015

होटल लालगढ़ पैलेस-श्री सादुल म्यूजियम को

'सर्टीफिकेट ऑफ एक्सीलेंस' सम्मान का चहुं ओर व्यापक स्वागत

बीकानेर(कासं)। पर्यटन क्षेत्र की प्रतिष्ठित अमरीकी एजेन्सी 'ट्रिप एडवाइजर' ने बीकानेर के होटल लालगढ़ पैलेस व श्री सादुल म्युजियम को 'सर्टीफिकेट ऑफ एक्सीलेंस' सम्मान प्रदान किया है जिसका सभी क्षेत्रों में स्वागत हुआ है। लालगढ़ पैलेस के समन्वयक श्री दलीपसिंह ने बताया कि ट्रिप एडवाईजर एजेन्सी यह अवार्ड पर्यटन से जुड़े होटल्स व म्यूजियम्स द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं तथा आने वाले पर्यटकों की संख्या, उनकी मेहमाननवाजी, प्राचीनता व स्थापत्य कला को आधार मान कर प्रदान करती है। एजेन्सी द्वारा किए गए सर्वे में उन्होंने होटल लालगढ़ पैलेस व श्री सादुल म्यूजियम को श्रेष्ठ मानते हुए सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेन्स 2015 का सम्मान प्रदान किया। बीकानेर के महाराजा गंगासिंह जी ने सन् 1902 में अपने पिता की याद में लालगढ़ पैलेस का निर्माण करवाया था। यह अतिसुन्दर महल वास्तुकला का एक बेहतरीन नमूना है। महल में आकर्षक जालीनुमा जरदोजी का काम किया हुआ है। महल के आगे बाग-बगीचे है जिसमें मोर नृत्य करते हुए देखे जा सकते जो कि आने वाले पर्यटकों को रोमांचित करते है। पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बीकानेर के महाराजा डॉ. करणीसिंह जी ने लालगढ़ पैलेस के एक हिस्से को होटल में परिवर्तित कर दिया था। 1974 में खुलने वाला यह बीकानेर का प्रथम पैलेस होटल था जो कि आज आने वाले पर्यटकों को करीब 50 अत्याधुनिक कमरों के साथ सुन्दर स्वीमिंग पुल, बिलियर्ड रूम, विशाल दरबार हॉल, कॉन्फ्रेंस हॉल तथा मसाज आदि की सुविधाएं उपलब्ध करवाता हैं। इसी लालगढ़ पैलेस के एक हिस्से में श्री सादुल म्यूजियम का संचालन होता है। इस म्यूजियम में बीकानेर के राजा-महाराजाओं के जीवन और काल से सम्बन्धित फोटोग्राफ्स, पुराने हथियार, पौशाकें तथा राजा-महाराजाओं द्वारा उपयोग में ली गई वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है जो कि आने वाले पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

पर्यटन विकास को ध्यान में रखते हुए ट्रस्ट की अध्यक्षा प्रिंसेस राज्यश्री कुमारी निरन्तर इस सुन्दर पैलेस के विकास में कार्यरत है।

नेशनल राजस्थान
बीकानेर • बुधवार • 01 जुलाई 2015

उपलब्धि | अमरीका की ट्रेवल एजेन्सी ने ट्रिप एडवाइजर ने बीकानेर की धरोहर को अवार्ड से नवाजा

लालगढ़ व भांडाशाह मन्दिर को एक्सीलेंस अवार्ड

■ डीएनआर रिपोर्टर . बीकानेर

अमरीका की ट्रेवल एजेन्सी ट्रिप एडवाइजर ने होटल लालगढ़ पैलेस व सार्दुल म्यूजियम को सर्टीफिकेट ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड प्रदान किया है। ट्रिप एडवाइजर एजेन्सी ने यह अवार्ड पर्यटन से जुड़े होटल व म्यूजियम द्वारा उपलब्ध करवाई जाने वाली सुविधाओं, पर्यटकों की संख्या, मेहमाननवाजी, प्राचीन स्थापत्य व स्थापत्य कला को आधार मानकर प्रदान किया जाता है। एजेन्सी द्वारा किए गए सर्वे में उन्होंने पैलेस व म्यूजियम को यह सम्मान प्रदान किया है।

वर्ष 1902 में निर्मित

महाराजा गंगा सिंह ट्रस्ट के समन्वयक दलीप सिंह ने बताया कि वर्ष 1902 में महाराजा गंगा सिंह ने इसका निर्माण अपने पिता की याद में करवाया था। यह महल वास्तुकला एवं स्थापत्य का बेहतरीन नमूना है। महल में आकर्षक जालियां व मेहराब आदि का बारीकी से किया गया कार्य है। महल के आगे दूर तक फैले बगीचे है।

पर्यटन का आकर्षण

पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बीकानेर के महाराजा डॉ.करणी सिंह ने लालगढ़ पैलेस के एक हिस्से को होटल में परिवर्तित कर दिया था। वर्ष 1974 में खुलने वाला यह बीकानेर का प्रथम पैलेस होटल था। इसमें 50 कमरों के साथ स्वीमिंग पूल, बिलियर्ड रूम, दरबार हॉल, कॉन्फ्रेंस हॉल व मसाज आदि की सुविधाएं है।

लालगढ़ पैलेस के एक हिस्से में सार्दुल म्यूजियम का संचालन होता है। म्यूजियम में राजा-महाराजाओं के जीवन और काल से संबंधित फोटोग्राफ्स, पुराने हथियार, पोशाकें तथा वस्तुएं सहित अनेक सामग्री को प्रदर्शित किया गया है। ट्रस्ट की अध्यक्ष राज्यश्री कुमारी ने उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त की है।

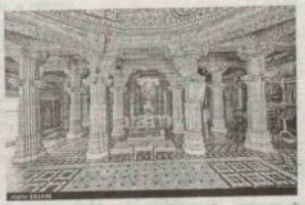

घी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध

पांच शताब्दी प्राचीन भांडाशाह जैन मंदिर को अमेरिका की ट्रिपएडवाइजर कंपनी ने सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेन्सी-2015 अवार्ड से नवाजा है। कम्पनी ने वेबसाइट में बीकानेर के जूनागढ़ व भांडाशाह जैन मंदिर की विस्तृत जानकारी अपलोड की है, इससे संसार के विभिन्न स्थानों पर प्रवास कर रहे देशी-विदेशी पर्यटक बीकानेर के वैभव के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास के अध्यक्ष निर्मल धारीवाल ने बताया कि बीकानेर में पांच शताब्दी प्राचीन भांडाशाह जैन मंदिर धार्मिक आस्था के साथ पर्यटन केन्द्र के रूप में निरन्तर ख्याति प्राप्त कर रहा है। जैन धर्म के पांचवें तीर्थंकर भगवान सुमतिनाथ का यह मंदिर नींव में घी डालने के साथ वास्तु व शिल्पकला में भी अनुकरणीय है। बीकानेर नगर में सर्वोच्च शिखर वाले कलात्मक तीन मंजिले त्रैलोक्य दीपक प्रसाद सुमति नाथ जैन मंदिर के निर्माण करने वाले भांडाशाह के नाम से अधिक जाना जाता है। इस मंदिर के शिलालेख में बताया गया कि संवत् 1571 में, आसोज सुदी दूज, महाराजा लूणकरण सिंह के समय इस मंदिर का निर्माण करवाया गया। नींव में घी डाला जाना- सेठ भांडाशाह घी का व्यापार करते थे। मंदिर का निर्माण करवा रहे सूत्रधार ने सेठ की परीक्षा के लिए नींव में घी डालने का प्रस्ताव रख दिया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर सेठजी ने हां करते हुए दूसरे दिन मजदूरों के आने से पहले ही अपने कर्मचारियों से मंदिर की नींव में घी डलवाना शुरू कर दिया। सूत्रधार जब आया और उसने देखा कि वास्तव में सेठजी घी डलवा रहे हैं तो उसने तुरन्त उनके पैर पकड़कर माफी मांगी तथा अपनी ओर से ली जा रही परीक्षा की बात कही।